प्रशासन एवं प्रबंध : अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

❖ परिचय :

- प्रत्येक समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए कोई न कोई निकाय या संस्था होती है, चाहें उसे नगर राज्य कहें अथवा राष्ट्र राज्य। राज्य, सरकार अथवा प्रशासन के माध्यम से कार्य करता हैं। राज्य के उद्देश्य और नीतियाँ कितनी ही प्रभावशाली, आकर्षक और उपयोगी क्यों न हो, उनसे उस समय तक कोई लाभ नहीं हो सकता, जब तक कि उनको प्रशासन के द्वारा कार्य रूप में परिणित नहीं किया जाए इसलिए प्रशासन के संगठन, व्यवहार व प्रक्रियाओं का अध्ययन करना आवश्यक है।
- ज्यों–ज्यों राज्य के स्वरूप और गतिविधियों का विस्तार होता गया है त्यों–त्यों प्रशासन का महत्व बढ़ता गया है। प्रशासन हमारे साथ गर्भ से लेकर कब्र तक चलता है। आज की बढ़ती हुई जटिलताओं का सामना करने में व्यक्ति एवं समुदाय अपनी सीमित क्षमताओं और साधनों के कारण, स्वयं को असमर्थ पाते हैं। चाहें अकाल, बाढ़, युद्ध या महामारी के रोकथाम करने की समस्या हो अथवा अज्ञान, शोषण, असमानता या भ्रष्टाचार को मिटाने का प्रश्न हो, प्रशासन की सहायता के बिना अधिक कुछ नहीं किया जा सकता।
- प्रशासन की आवश्यकता सभी निजी एवं सार्वजनिक संगठनों को होती है। प्रशासन स्वप्न और उनकी पूर्ति के बीच की दुनिया है।
- प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को प्रशासन की आवश्यकता होती है, चाहे वह लोकतंत्रात्मक हो अथवा समाजवादी या तानाशाही। एक दृष्टि से, प्रशासन की आवश्यकता लोकतंत्र से भी अधिक समाजवादी व्यवस्थाओं को रहती है। समाजवादी व्यवस्थाओं के सभी कार्य प्रशासकों द्वारा ही सम्पन्न किये जाते है। प्रशासन का कार्य समाजवाद की अपेक्षा लोकतंत्र में अधिक कठिन होता है। समाजवाद में प्रशासन पूरी तरह से एक राजनीतिक दल द्वारा नियन्त्रित और निर्देशित रहता है। इससे प्रशासन का नीतिगत एवं निर्णय संबंधी दायित्व अपेक्षाकृत कम हो जाता है जबकि प्रजातंत्र में प्रशासन के बिना लोकतंत्र की सफलता मृगतृष्णा मात्र होती है।
- प्रशासन सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नीतियों एवं निर्णयों के क्रियान्वयन में संलग्न रहता है साथ ही प्रशासन इन सामान्य लक्ष्यों एवं नीतियों की क्रियान्विति दशाओं का निर्माण भी करता चलता है।
- प्रशासन अपनी क्रियाओं द्वारा सामान्य जीवन को नैतिकता और उच्च आदर्शों की दिशा में ले जाने का प्रयास करता है।
- प्रशासन के बाह्य कार्यों तक सीमित होते हुए भी उसे "सामूहिक नैतिकता" की व्यापक प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

प्रशासन का अर्थ एवं परिभाषा :

❖ प्रशासन का अर्थ :

- 'प्रशासन' मूल रूप में संस्कृत का शब्द है। यह **'प्र'** उपसर्गपूर्वक **'शास्'** धातु से बना है। इसका अर्थ हैं **'प्रकट या उत्कृष्ट रीति से शासन करना।'** आजकल शासन का अभिप्राय 'सरकार' से समझा जाता है, किन्तु इसका वास्तविक अर्थ **'निर्देश देना, पथ-प्रदर्शन करना, आदेश या आज्ञा देना है।'** वैदिक युग में प्रशासन का प्रयोग इसी अर्थ में होता था। उस समय मुख्य पुरोहित अन्य सहायक पुरोहितों को यज्ञ की सामग्री तथा कार्यों के बारे में आवश्यक निर्देश एवं आदेश देने का कार्य किया करता था, उसे प्रशासक कहा जाता था बाद में यह शासन संचालक और राजा के लिए प्रयुक्त होने लगा।
- अंग्रेजी में मूलतः AD – Ministration जो लैटिन भाषा के शब्द AD व Ministrare से मिलकर बना है।
- इसमें Ministrare का तात्पर्य व्यवस्थित करना, देखभाल करना और एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के हित की दृष्टि से उनकी सेवा का कोई कार्य करना है। जैसे- पादरी द्वारा व्यक्ति को धार्मिक लाभ पहुँचाने के लिए धार्मिक संस्कार करना, न्यायाधीश द्वारा न्याय करना, डॉक्टर द्वारा बीमार को दवाई देना।

❖ प्रशासन की परिभाषा :

- **एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका –** "कार्यों के प्रबन्धन अथवा उनको पूरा करने की क्रिया।"
- **नीग्रो के अनुसार –** प्रशासन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य तथा सामग्री का उपयोग एवं संगठन है।
- **डिमॉग एवं कोएनिंग के अनुसार –** वही (प्रशासन) यह निर्धारण करता है कि हम किस तरह का सामान्य जीवन बिताएंगे और हम अपनी कार्यकुशलताओं के साथ कितनी स्वाधीनताओं का उपयोग करने मे समर्थ होंगे।"
- **ई. एन. ग्लेडन के अनुसार –** प्रशासन एक लंबा और भोड़ा आंडबरपूर्ण शब्द है लेकिन इसका अर्थ सीधा-साधा है – मामलों का प्रबंधन करना, लोगों की देखभाल करना या उनका ध्यान रखना। यह एक निर्धारित उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया सुनिश्चित कार्य है।
- **लूथर गुलिक के अनुसार –** प्रशासन का संबंध निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यों को करवाने से है।
- **मैकेंजी के अनुसार –** प्रशासन किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित एवं मनुष्य तथा वस्तुओं का प्रयोग है। (3M - Man, Material, Method)

- **चार्ल्स बियर्ड के अनुसार-** "कोई भी विषय इतना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना की प्रशासन है। राज्य एवं सरकार का यहाँ तक कि, स्वयं सभ्यता का भविष्य, सभ्य समाज के कार्यों का निष्पादन करने में सक्षम प्रशासन के विज्ञान, दर्शन और कला के विकास करने की हमारी योग्यता पर निर्भर है।"
- **डॉनहम के अनुसार-** "यदि हमारी सभ्यता असफल होगी तो यह मुख्यत: प्रशासन की असफलता के कारण होगी।"
- **स्मिथबर्ग, साइमन** एवं **थॉमसन प्रशासन** को "सहयोगपूर्ण समूह व्यवहार" का पर्याय मानते है।
- **ऑर्डवे टीड के अनुसार-** "प्रशासन एक नैतिक कार्य है और प्रशासक एक नैतिक अभिकर्त्ता है।"
- **साइमन के अनुसार,** "प्रशासन सभी सहयोगपूर्ण व्यवहार के प्रतिमानों से संबद्ध होता है। अत: कोई भी व्यक्ति जो दूसरे व्यक्ति के साथ किसी गतिविधि में सहयोग करता है, वह प्रशासन में लगा हुआ है।"
- **आधुनिक विचारकों के अनुसार** – प्रशासन 'एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनुष्यों द्वारा परस्पर सहयोग से की जाने वाली एक सामूहिक क्रिया है।'

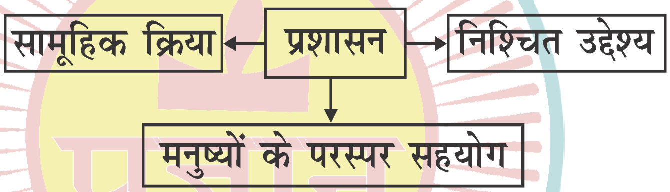

- प्रशासन का संबंध निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यों को करवाने से है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों की ऐसी सामूहिक मानवीय गतिविधियाँ जिनमें समान लक्ष्य व सामूहिक प्रयास अंतर्निहित हो, प्रशासन कहलाता है।

प्रशासन के सामान्य लक्षण

1. मनुष्य तथा भौतिक संसाधनों का समन्वय करना।
2. सामान्य लक्ष्यों तथा नीति का पूर्व निर्धारण करना।
3. संगठन एवं मानवीय सहयोग को बढ़ावा देना।
4. मानवीय गतिविधियों का निर्देशन एवं नियत्रंण करना।
5. लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना।

- हमारा उद्देश्य सभी प्रकार के प्रशासन का अध्ययन करना नहीं है। हम केवल सार्वजनिक अथवा लोक नीतियों के क्रियान्वयन से संबंधित प्रशासन का अध्ययन करना चाहते है। इसे लोक प्रशासन कहा गया है।

- **मार्शल डिमॉक** का कहना है कि ''प्रशासन का सम्बन्ध सरकार के 'क्या' तथा 'कैसे' से है। 'क्या' का अर्थ 'विषय वस्तु' से है अर्थात् एक क्षेत्र का तकनीकी ज्ञान जो कि प्रशासकों को उनका कार्य करने का सामर्थ्य प्रदान करता है। कैसे 'प्रबन्ध की तकनीकी' है अर्थात् वे सिद्धांत जिनके अनुसार सरकारी योजनाएँ सफल बनाई जाती हैं। दोनों ही अपरिहार्य है और दोनों मिलने पर प्रशासन की स्थापना करते हैं।

प्रशासन के रूप

प्रशासन को अच्छी तरह से समझने के लिए उसके चार रूपों का अध्ययन किया जाना चाहिये।

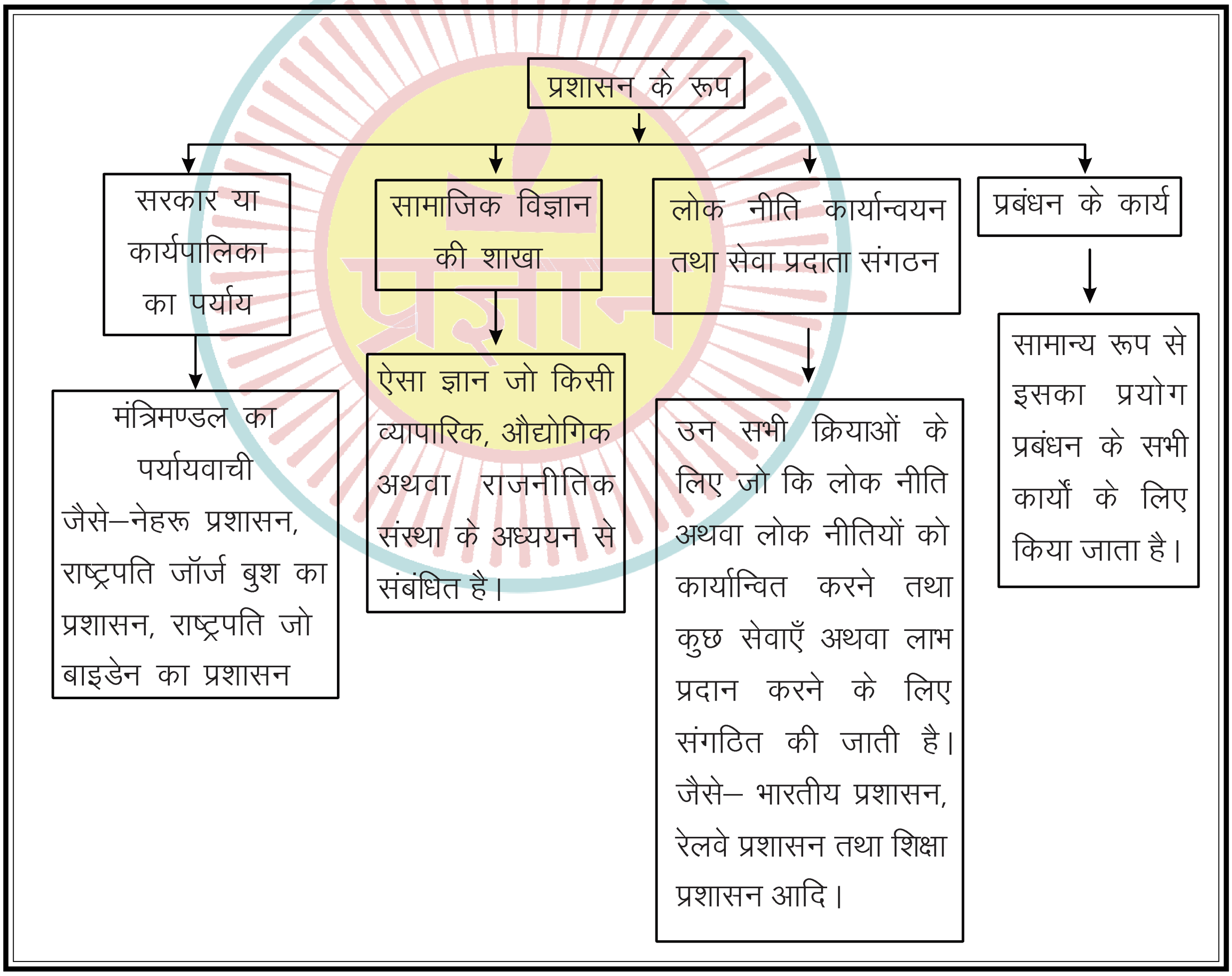

- **सामान्य प्रशासन के मुख्यत: दो विशिष्ट रूप –**

(i) लोक प्रशासन।

(ii) निजी प्रशासन।

प्रशासन की विशेषताएँ

1. एक से अधिक व्यक्तियों के सहयोग की भावना से कार्य करता हैं।
2. किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाने वाला कार्य।
3. प्रशासन के उद्देश्य व इसमें काम करने वाले व्यक्तियों के उद्देश्यों में भिन्नता हो सकती है।
4. संगठन इसका प्रमाण, इसके बिना वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता।
5. प्रशासन करने वाले व्यक्ति के पास प्राधिकार/सत्ता होनी चाहिए। इसी के आधार पर दूसरों से किसी कार्य में सहयोग लेता है।
6. प्रशासन का प्रयोग विशाल, व्यापक तथा औपचारिक संगठनों के लिए किया जाता है। परिवार जैसे छोटे संगठन प्रशासन नहीं कहलाते हैं। जैसे- बड़े कॉलेज, विश्वविद्यालय, चिकित्सालय आदि।
7. प्रशासन सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
8. यह कला व विज्ञान का समन्वित रूप है।

प्रशासन संबंधी प्रमुख दृष्टिकोण

- प्रशासन में किन गतिविधियों, कार्यकलापों अथवा प्रक्रियाओं को शामिल किया जाए जैसे प्रश्नों का व्यापक एवं विशिष्ट दृष्टिकोण से उत्तर दिया जा सकता है। यह दृष्टिकोण है –

1. एकीकृत दृष्टिकोण (Integrated view) 2. प्रबंधात्मक दृष्टिकोण (Managerial view)

1. एकीकृत दृष्टिकोण :

- प्रशासन में वे सभी क्रियाएँ जो निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है। जिसमें उच्च पदाधिकारी, तकनीकी कर्मचारी, लिपिकीय वर्ग व सहायक कर्मचारी भी शामिल होते हैं। एकीकृत दृष्टिकोण को व्यापक दृष्टिकोण माना जाता हैं।
- साइमन ने कहा है कि ''सामान्य लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सहयोग करने वाले वर्गों की क्रियाएँ ही प्रशासन है।''
- संगठन में सभी कार्य व प्रक्रिया चाहे वे किसी भी स्तर के कर्मचारी द्वारा सम्पन्न की जाए प्रशासन का भाग है। एल.डी. व्हाइट, ड्वाइट वाल्डो, नीग्रो एवं नीग्रो आदि इस दृष्टिकोण के समर्थक है।

2. प्रबन्धात्मक दृष्टिकोण :

- इसमें केवल नियोजन, संगठन, समन्वय, निर्देशन, नियन्त्रण व पर्यवेक्षण (POSDCORB) आदि कार्य ही शामिल किये जाते हैं। इसमें नैत्यिक (routine) व शारीरिक कार्य सम्मिलित नहीं किये जाते है।
- संगठन में केवल उच्च स्तरीय निर्णय लेने वाले व उनका क्रियान्वयन करने वाले व्यक्ति ही इस प्रशासन का भाग है।
- एक अध्यापक, यान्त्रिक, लिपिक या चपरासी को प्रशासक नहीं कहा जा सकता। अत: प्रबन्धकीय दृष्टिकोण को संकुचित दृष्टिकोण माना जाता हैं। इस दृष्टिकोण में केवल शीर्ष स्तर की गतिविधियाँ ही प्रशासन में सम्मिलित होती है।
- साइमन, लूथर गुलिक, मूनै व रैले तथा हेनरी फेयोल इस दृष्टिकोण को मानते हैं।
- प्रशासन के संबंध में उपर्युक्त दोनों दृष्टिकोण एकतरफा, एकांकी और अपूर्ण है। सिपाही की क्षमताओं एवं समस्याओं पर ध्यान न देने वाला सेनापति सफल नहीं हो सकता। सिर्फ प्रबन्धात्मक दृष्टिकोण को अपनाकर प्रशासन के ''हृदय'' तक नहीं पहुँचा जा सकता है।
- वहीं दूसरी ओर एकीकृत दृष्टिकोण को माना जाए तो प्रशासन में राजनीतिक-प्रशासनिक द्विभाजन की मान्यता को नकार दिया जाता है। अत: प्रशासन में दोनों ही प्रकार की गतिविधियाँ शामिल है। इसमें प्रशासन के अध्ययन का क्षेत्र सीमित हो जाता है।

❖ प्रशासन का महत्व :

- सरकार व समाज के मध्य सेतू का कार्य करता है।
- सरकार के कार्यों को पूरा करना।
- नीति-निर्माण का कार्य करना।
- नीतियों का क्रियान्वयन करना।
- संसाधनों का संरक्षण करना।
- परिवर्तन का वाहक होता है।
- स्थायी संगठन का निर्माण करना।

शासन और प्रशासन में अंतर

- **शासन** – जनता या जनता के वर्ग को शासित करना शासन कहलाता है।
- **प्रशासन** – उत्कृष्ट शासन (नियमानुसार, विधिक, सेवाभावी व समभावी) को प्रशासन कहा जाता है।

क्र.सं.	शासन	प्रशासन
1.	शासन का निर्माण निर्वाचित प्रतिनिधियों से होता है। यह सरकार से सम्बन्धित है।	प्रशासन का निर्माण नियुक्त व्यक्तियों से होता है। यह नौकरशाही से सम्बन्धित है।
2.	शासन उच्चस्तरीय होता है। नीतियों के निर्माण का कार्य शासन का ही होता है।	प्रशासन उच्च से लेकर अधीनस्थस्तरीय होता है। नीतियों के क्रियान्वयन का कार्य प्रशासन का होता हैं।
3.	शासकों को 'जनप्रतिनिधि' कहते हैं। यह जनता के प्रति जवाबदेह होते है।	प्रशासको को लोक सेवक कहते हैं। यह सरकार के प्रति जवाबदेह होते है।
4.	शासन अस्थायी होता है।	प्रशासन स्थायी होता हैं।
5.	शासक निर्णयकर्ता होते हैं।	प्रशासक निर्णय में सहायता करते हैं।
6.	शासक विशेषज्ञ नहीं होते है।	प्रशासक सामान्यज्ञ होते हैं।
7.	उदाहरण–मंत्री	प्रशासनिक अधिकारी

प्रशासनिक संस्कृति

- संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होती हैं।
- संस्कृति और व्यवहार में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। संस्कृति एक व्यक्ति, एक समाज या एक संस्था द्वारा पोषित मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- कानून के निर्माण, संशोधन एवं क्रियान्वयन के सम्बन्ध में प्रशासन द्वारा अपनाई गई पद्धति या व्यवहार प्रशासनिक संस्कृति हैं। प्रशासन के कार्य करने का ढंग ही प्रशासनिक संस्कृति हैं।

❖ प्रशासनिक संस्कृति की विशेषताएँ :

1. प्रत्येक देश की प्रशासनिक संस्कृति में अन्तर है क्योंकि प्रशासन के समक्ष उपस्थित कार्य एवं लक्ष्य भिन्न है।
2. प्रशासनिक संस्कृति एक परिवर्तनशील अवधारणा है जो परिस्थिति एवं काल के अनुसार बदलती रहती हैं।
3. प्रशासनिक संस्कृति का स्वरूप देश के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक वातावरण पर भी निर्भर करता है।
4. प्रशासनिक संस्कृति राजनीतिक व्यवस्था, करिश्माई व्यक्तित्व तथा जनता की जागरूकता पर भी निर्भर करती है।

लोक प्रशासन का अर्थ एवं परिभाषा

- लोक प्रशासन एक संयुक्त शब्द है जो दो शब्दों 'लोक' और 'प्रशासन' से मिलकर बना है। 'लोक' का अर्थ है 'सार्वजनिक' या 'सारी जनता से सम्बन्धित।'
- प्रशासन का वह भाग जो सामान्य जनता के लाभ के लिए होता है, लोक प्रशासन कहलाता है। लोक प्रशासन का संबंध सामान्य अथवा सार्वजनिक नीतियों से होता है।
- **एल.डी. व्हाइट के अनुसार** - लोक प्रशासन में ''वे गतिविधियाँ आती है जिनका प्रयोजन सार्वजनिक नीतियों को पूरा करने अथवा क्रियान्वित करने से होता है।
- **वुडरो विल्सन के अनुसार-** लोक प्रशासन, विधि अथवा कानून को विस्तृत एवं क्रमबद्ध रूप मे क्रियान्वित करने का काम है। कानून को क्रियान्वित करने की प्रत्येक क्रिया प्रशासकीय क्रिया है। ऐसी सामूहिक मानवीय गतिविधियों का समूह जिनका उद्देश्य लाभ के स्थान पर सेवा करना अधिक होता है।

❖ **लोक प्रशासन के दो अर्थ : (व्यापक और संकुचित)**

- व्यापक रूप से राज्य की राजनीतिक शक्तियों के प्रयोग करने में उनके द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को ही लोक प्रशासन की संज्ञा दी जाती है। इसमें विधायिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका द्वारा किये गये सभी कार्यों का समावेश हो जाता है। संकुचित अर्थ में इसका प्रयोग केवल कार्यपालिका द्वारा किये गये सभी कार्यों का समावेश किया जाता है।

निम्नलिखित परिभाषाएँ लोक प्रशासन को अपने व्यापक तथा संकुचित परिप्रेक्ष्य में देखती है-

- **फ्रेंक गुडनॉऊ के अनुसार-** लोक प्रशासन के अंतर्गत विधि को लागू करने वाले कार्यो के साथ-साथ अर्ध-वैज्ञानिक, अर्ध-न्यायिक और अर्ध-व्यावसायिक या वाणिज्यिक कार्य भी शामिल है।
- **एपलबी के अनुसार-** ''नीति निर्माण ही लोक प्रशासन का सार है।
- **अल्बर्ट साइमन के अनुसार-** ''साधारण प्रयोग में लोक प्रशासन का अर्थ राष्ट्रीय, प्रांतीय, स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं की क्रिया से है।
- **पार्सी मैकक्वीन के अनुसार-** ''लोक प्रशासन का सम्बन्ध सरकार के कार्यों से है, चाहे वे केन्द्र द्वारा सम्पादित हो अथवा स्थानीय सरकार द्वारा।''
- **फिफनर के अनुसार-** ''सरकार का कार्य करना ही लोक प्रशासन है चाहे वह स्वास्थ्य प्रयोगशाला में एक्स-रे मशीन का संचालन हो या टकसाल में सिक्के डालना।

- लोक प्रशासन का संबंध सरकार की उन क्रियाओं एवं गतिविधियों से है जिन्हें विधि तथा लोकनीति के क्रियान्वयन हेतु सम्पन्न किया जाता है। परन्तु इसके साथ ही वह एक संरचना या संगठन, एक प्रक्रिया तथा व्यवसाय भी हैं।
- लोक प्रशासन, प्रशासन का वह भाग है जो एक विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत रहकर राजनीतिक निर्णयों को कार्यरूप में लागू करता है।

लोक प्रशासन के लक्षण

1. संबंध सार्वजनिक समस्याओं से हैं।
2. लोक प्रशासन का संबंध सरकारी कार्यों से होता हैं।
3. लोक प्रशासन का लक्ष्य सार्वजनिक विधियों एवं नीतियों को कार्यान्वित करना हैं।

प्रशासन और लोक प्रशासन में अन्तर

क्र. सं.	प्रशासन (Administration)	लोक प्रशासन (Public Administration)
1.	प्रशासन एक सामान्य शब्दावली है जिसका परिप्रेक्ष्य व्यापक है।	लोक प्रशासन का परिप्रेक्ष्य संकुचित है क्योंकि यह सार्वजनिक नीतियों से ही सम्बन्धित है।
2.	प्रशासन का सम्बन्ध कार्यों को सम्पन्न कराने से है जिससे कि निर्धारित लक्ष्य पूरे हो सके।	लोक प्रशासन दोहरे स्वरूप वाला है। यह अध्ययन अध्यापन एवं अनुसंधान का शैक्षणिक विषय होने के साथ-साथ क्रियाशील विज्ञान भी है।
3.	आमतौर से प्रशासन एक क्रिया (activity) भी है और प्रक्रिया (Process) भी है।	लोक प्रशासन का सम्बन्ध सार्वजनिक नीति के निर्माण व क्रियान्वयन से है। यह नीति विज्ञान और प्रक्रिया दोनों हैं।
4.	प्रशासन एक सार्वभौमिक क्रिया है जिसे समस्त प्रकार के समूह प्रयत्नों में देखा जा सकता है, चाहे वह समूह, परिवार, राज्य या अन्य सामाजिक संघ हो।	लोक प्रशासन का सम्बन्ध विशिष्ट रूप से सरकारी क्रियाकलापों से है। इसके अन्तर्गत वे सभी प्रशासन आ सकते हैं जिनका जनता पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता हैं।
5.	प्रशासन के अन्तर्गत लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों समाविष्ट हैं।	लोक प्रशासन का सम्बन्ध 'सार्वजनिक' (जनता से सम्बन्धित) प्रशासन से हैं।

लोक प्रशासन का स्वरूप/प्रकृति

- लोक प्रशासन का प्रयोग दो दृष्टिकोण या परिप्रेक्ष्यों को अपना कर किया जाता है। एक दृष्टिकोण से वह प्रकिया, गतिविधियों या कार्यों का प्रतिमान है। इस अर्थ में वह शासकीय मामलों के संचालन से संबद्ध है। दूसरे दृष्टिकोण में प्रशासन की गतिविधियों, कार्यों का बौद्धिक अथवा वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया जाता है और निष्कर्ष निकाले जाते है।

- **डॉ. अवस्थी तथा माहेश्वरी के शब्दों में,**''लोक प्रशासन का प्रयोग दो अर्थों में किया जा सकता है। प्रथम अर्थ में लोक प्रशासन का शासकीय मामलों के संचालन की विधि अथवा प्रक्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है। द्वितीय, यह बौद्धिक अन्वेषण का क्षेत्र भी माना जाता है। अपने प्रथम रूप में लोक प्रशासन एक प्रक्रिया है तथा दूसरे रूप में अध्ययन का एक विषय। एक प्रकिया के रूप में लोक प्रशासन निश्चित ही कला है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या शासकीय मामलों के अध्ययन के विषय के रूप में लोक प्रशासन को विज्ञान की संज्ञा दी जा सकती है।''

❖ **लोक प्रशासन : एक कला के रूप में : कला से अभिप्राय**- ज्ञान को यथार्थ जीवन वास्तविक जीवन में व्यवहृत करना कला है। कला का अपना कौशल होता है और वह व्यवस्थित ढंग से व्यवहार में आती है। कला व्यवस्थित अभ्यास है।

○ **ग्लैडन के अनुसार :** कला में ज्ञान की आवश्यकता होती है किंतु यह सिद्धांत की अपेक्षा अभ्यास पर विशेष बल देती है, अत: कलाकार के लिए उस शास्त्र का विद्वान होने की अपेक्षा उस कार्य को करने में कुशल होना चाहिए।

- प्रशासन एक ऐसी कला है जिसका प्रेरणा स्त्रोत व्यक्ति का अन्त: करण है। वह व्यक्ति के अनुभव चातुर्य, निरन्तर विकास तथा कतिपय सर्वव्यापी निश्चित नियमों के बारम्बार अभ्यास का परिणाम होती है। उसके साक्षात्कार के लिए विशेष पद्धतियों एवं सामग्री की आवश्यकता होती है। ग्लैडन उसे ऐसी क्रिया मानते है जिसमें विशेष प्रकार की कुशलता की आवश्यकता होती है।

- प्लेटों ने ''रिपब्लिक'' में प्रशासन के लिए लम्बी अवधि के शिक्षण-प्रशिक्षण का प्रावधान किया है। प्रत्येक कला की तरह प्रशासन भी व्यक्ति के जीवन को अधिक सुखद व अधिक सुन्दर बनाना चाहता हैं अर्थात् वह भी सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की साधना है। उसके लिए एक प्रशासक को कठिन तथा एक दीर्घकालीन साधना की आवश्यकता होती है। एक कला के रूप में प्रशासन को पहचाना और काम में लिया जा रहा है। कौटिल्य, अकबर, टोडरमल, बिस्मार्क, सरदार वल्लभभाई पटेल व नेपोलियन आदि को प्रशासन के महान कलाकार माना जा सकता है।

- अच्छे गायक, कलाकार, संगीतकार, कवि, चित्रकार आदि की तरह, इस धारणा के अनुसार अच्छे प्रशासक भी ''पैदा होते है, बनाये नहीं जाते''। प्रशासन द्वारा विज्ञान के सिद्धांतों, नियमों आदि को कितना ही सीख लेने का प्रयत्न क्यों न किया जाये, किन्तु उसके परिणामस्वरूप कोई व्यक्ति एक अच्छा प्रशासक नहीं बन पाता। जिस प्रकार एक कलाकार, कवि या चित्रकार कला के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है, उसी प्रकार एक प्रशासक प्रशासन के माध्यम से अपनी आत्माभिव्यक्ति करता है। उर्विक, ग्लैडन व टीड ने इसी प्रकार का समर्थन किया है। एक कला के रूप में, प्रशासन, अरस्तू से लेकर वर्तमान समय तक लगातार बना हुआ है।

❖ **डॉ. महादेव प्रसाद शर्मा के अनुसार :**

- प्रशासन अपने आप में निश्चित रूप से ही एक ललित कला है। वैसे तो मूर्ति-निर्माण, चित्रांकन, संगीत और स्थापत्य को हम ललित कलाओं में सम्मिलित करते हैं पर प्रशासन इनसे कम नहीं वरन् कुछ अधिक ही ललित कला है।
- लोक प्रशासन एक कला है क्योंकि प्रायः यह देखा गया है कि प्रशासक प्रशिक्षण द्वारा बनाए जाते हैं न कि पैदा होते हैं। विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों में सेवा वर्ग को प्रशासनिक चातुर्य एवं गुणों का ही ज्ञान कराया जाता है। प्रशासनिक कला को रुचि एवं परिश्रम से ही सीखा जा सकता है। कुछ लोगों की धारणा है कि कला ईश्वर प्रदत्त और जन्मजात अधिक होती है। इस मत में थोड़ा सत्य तो है परन्तु वास्तविकता यह नहीं है।
- जन्म से कोई व्यक्ति सफल प्रशासक नहीं होता। प्रशासन एक ऐसी कला है जो निपुणता, कुशलता, साध ना व अभ्यास द्वारा ही प्राप्त होती है।
- स्वाभाविक प्रतिभा का भी परिष्कार और विकास किया जाता है। उसके लिए कठिन साधना और अभ्यास की आवश्यकता होती है। किन्तु यह सत्य है कि एक अच्छा प्रशासक बनने के लिए भाव भरा हृदय, मानवता के प्रति विश्वास, दूरदृष्टि, विवेक आदि गुणों का होना आवश्यक है।
- एक दृष्टि से प्रशासक अन्य कलाकारों की अपेक्षा अधिक ऊँचा होता है। अन्य कलाएँ अमूर्त, अस्थायी, एकांकी और समसामयिक होती है।
- प्रशासन ठोस और मूर्त रूप से अधिक सुन्दर जीवन को अधिक आकर्षक तथा अधिक विका समान बनाने का प्रयास करता है। प्रशासक मानव को परलोक के बजाए इसी लोक में सुखी बनाने का सतत प्रयत्न करता है।

❖ लूथर गुलिक के अनुसार :

- एक अच्छे प्रशासक को 'पोस्डकोर्ब' (POSDCORB) तकनीकों में पारंगत होना चाहिए। यदि प्रशासन कला है तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उसका माध्यम अथवा साधन क्या है ? प्रशासन के प्रमुख साध न हैं – सबसे पहले तो वह अपने को संगठन के द्वारा व्यक्त करता है फिर वह अपने को संगठन के सदस्यों के द्वारा तथा फिर अपने को इन्हीं लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के द्वारा स्वरूप देता है।

❖ संक्षेप में लोक प्रशासन को निम्न तर्कों के आधार पर कला माना जा सकता है :

1. **सर्वमान्य सिद्धान्त :** प्रत्येक कला के कतिपय सर्वमान्य सिद्धांत होते हैं जिन पर वह आधारित होती है। इसी प्रकार लोक प्रशासन के भी कुछ सर्वमान्य सिद्धान्त हैं। यदि प्रशासक इनकी उपेक्षा करे तो उसे किसी भी हालत में सफलता नहीं मिल सकती।
2. **अभ्यास की आवश्यकता :** हर कला का अपना एक विशेष कौशल होता है। उसे हासिल करने के लिए कलाकार को अनुभवी विशेषज्ञों से प्रशिक्षण लेना होता है। एक अच्छा प्रशासक बनने के लिए प्रशिक्षण, अनुभव व अभ्यास की आवश्यकता होती है। इसी कारण प्रशासनिक सेवाओं में परिवीक्षाधीन अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जाता है।
3. **विशेष रुचि एवं गुण :** जिस प्रकार किसी भी कला में सफलता प्राप्त करने के लिए विशेष रुचि एवं गुणों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार प्रशासक बनने के लिए भी कुछ विशिष्ट रूझान एवं गुण आवश्यक माने जाते हैं। प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने प्रशासन को एक कला मानते हुए 'दार्शनिक राजा' (Philosopner king) में कुछ विशेष गुण अनिवार्य बताए हैं। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में और मैकियावेली ने 'दी प्रिन्स' में 'शासन की कला' पर विस्तार से विचार किया है और प्रशासकों के लिए आवश्यक गुणों पर प्रकाश डाला है।
4. **विकास की प्रक्रिया :** जैसे कि अन्य कलाओं का क्रमिक विकास होता है उसी प्रकार लोक प्रशासन का भी धीरे-धीरे विकास हुआ है और अभी भी हो रहा है।
5. **परिवर्तनशीलता :** जिस प्रकार अन्य कलाएँ और उनकी प्रक्रिया अथवा पद्धतियाँ परिवर्तनशील हैं उसी प्रकार लोक प्रशासन की प्रक्रियाएं भी समय और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।
6. **कला सिद्धांत और व्यवहार का बोध है :** लोक प्रशासन व्यवहार से सिद्धान्त बनाता है और सिद्धांत को व्यवहार में लागू करता है।

7. **प्रत्येक कला का एक माध्यम या साधन होता है :** चित्रकला का साधन जैसे रंग हैं, संगीत का साधन स्वर है, उसी प्रकार लोक प्रशासन का साधन संगठन है। संगठन के उद्देश्यों तथा स्वयं को लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश द्वारा स्वरूप प्रदान करता है।

8. **कला के अन्तर्गत 'सत्यम् शिवम्, सुन्दरम्' की अभिव्यक्ति :** लोक प्रशासन की दुनिया सत्य है, उसके उद्देश्य शिव (कल्याणकारी) और उसकी तकनीकी का सौन्दर्य उसे कलात्मक रूप प्रदान करता है।

9. **प्रत्येक कला में सृजनात्मक अभिव्यक्ति होती है :** कला निर्माण है, सृजन है और लोक प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य एक नये स्वस्थ समाज मे अपना योगदान देना है। जो विचारक प्रशासन को कला नहीं मानते उनका कहना है कि प्रशासक की सफलता और असफलता मानवीय वातावरण एवं परिस्थितियों पर निर्भर करती है। एक स्थान पर एक प्रशासक उन्हीं तकनीकों से सफल हो जाता है और दूसरे स्थान पर असफल हो जाता है। यह सच है कि मानवीय और सामाजिक पर्यावरण प्रशासन की कार्यकुशलता को उसी प्रकार प्रभावित करते है जिस प्रकार खेल का मैदान बदलने पर नया वातावरण खिलाड़ी के कौशल को प्रभावित करता है। किन्तु प्रशासन एक कौशल है। प्रत्येक व्यक्ति इस कौशल को हासिल नहीं कर सकता। प्रशिक्षण और अभ्यास के बाद ही इस 'उच्चतम कला' को हासिल किया जा सकता है। लोक प्रशासन कला की भांति सिद्धांतों की अपेक्षा व्यवहार पर अधिक बल देता हैं।

❖ लोक प्रशासन : एक विज्ञान के रूप में :

- विज्ञान का अर्थ किसी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान से है। यह एक ऐसा ज्ञान है जिसका अध्ययन एक क्रमबद्ध नियम के अनुसार किया जाता है और जो कारण एवं कार्य में सम्बन्ध स्थापित करता है। विज्ञान से हमें ऐसे ज्ञान का आभास होता है जो निश्चित है जिसके तथ्यों की सत्यता का परीक्षण किया जाता है जो समय, स्थिति तथा वातावरण से प्रभावित नहीं है जिसका सम्बन्ध भौतिक पदार्थों से है जो भविष्य में निश्चित तर्क निकाल सकता है और जिसका ज्ञान पर्यवेक्षण एवं अन्वेक्षण पर अवलम्बित है। विज्ञान निश्चित सिद्धातों तथा नियमों का समुच्चय है जो किसी विशेष घटना या गतिविधि का स्पष्टीकरण कर सकता है तथा इन्हीं नियमों के आधार पर भावी घटना की भविष्यवाणी की जा सकती है।

❖ विज्ञान की प्रमुख विशेषताएं :

1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करना।
2. तथ्यों का संग्रहण, वर्गीकरण व सारणीयन करना
3. अवलोकन कार्य करना।
4. तथ्यात्मक प्रस्तुतीकरण करना।
5. सिद्धान्तों का निर्माण व परीक्षण करना।
6. परिणाम की सटीकता व पुनरावृत्ति करना।
7. भविष्यवाणी करने में सक्षम।
8. कार्यकरण संबंधो का ज्ञान होता है।

विज्ञान का वर्गीकरण

प्राकृतिक विज्ञान

- प्रकृति व प्राकृतिक घटनाओं पर आधारित।
- वे विषय शामिल जिसमें घटनाओं के निश्चित परिणाम निकलते हैं।
- प्रत्येक घटना को प्रयोगों या आँकड़ों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।
- एक बार परिणाम प्राप्त होने पर हर बार वही परिणाम प्राप्त होना जैसे–भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व खगोल विज्ञान आदि।

सामाजिक विज्ञान

- यह मानव विज्ञान, इसमें केन्द्रीय बिन्दु मानव है।
- इसमें घटनाओं के निश्चित परिणाम नहीं निकलते हैं।
- इसमें अवलोकन व आँकड़ों के विश्लेषण द्वारा सिद्धान्तों का निर्माण व विश्लेषण किया जाता है।
- मानव व्यवहार में अनिश्चितता है, इसलिए इसके प्रयोगों व परीक्षणों के परिणाम में हर बार अंतर आने की संभावना पायी जाती हैं।

❖ प्राकृतिक विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में अंतर :

क्र.सं.	प्राकृतिक विज्ञान	सामाजिक विज्ञान
1	प्राकृतिक विज्ञान की विषय वस्तु भौतिक पदार्थ हैं।	सामाजिक विज्ञानों की विषय वस्तु, व्यक्ति तथा समाज हैं।
2	इसमें भौतिक नियम पाये जाते हैं।	इसमें सामाजिक नियम पाये जाते हैं।
3	भौतिक तत्वों में भौतिक सम्बन्ध पाया जाता है।	इनमें समाज के मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध शामिल होते हैं।
4	अध्ययन पूर्ण तटस्थता या निष्पक्षता से किया जाता है।	अध्ययन में पक्षपात तथा व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव पाया जाता है।
5	प्राकृतिक विज्ञानों के सिद्धान्तों के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती हैं।	सामाजिक विज्ञानों में भविष्यवाणी करना प्रायः कठिन रहता हैं।
6	अध्ययन वस्तु मूर्त 'इन विज्ञानों का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा सकता हैं।'	अध्ययन वस्तु अमूर्त 'इन विज्ञानों की न तो सुव्यवस्थित प्रयोगशाला है, न उपकरण है और न ही परीक्षण का कार्य सरल है।
7	प्राकृतिक विज्ञानों के नियम एवं सिद्धान्त स्थिर, सार्वभौमिक तथा परीक्षण योग्य है।	सामाजिक विज्ञानों के सिद्धान्त एवं नियम, कम सार्वभौमिक तथा परीक्षण के लिए पर्याप्त नहीं होते।

- लोक प्रशासन विज्ञान कहलाने योग्य है या नहीं इस विषय पर सभी विद्वान एक मत नहीं है। एक शैक्षणिक विषय या ज्ञान की शाखा के रूप में लोक प्रशासन को ''विज्ञान'' के संबंध में तीन स्थितियाँ अथवा मत पाये जाते है-

1. लोक प्रशासन को विज्ञान न मानने के कारण :

- अनेक विचारक लोक प्रशासन को विज्ञान नहीं मानते जैसे-
- **एल.डी व्हाइट** - लोक प्रशासन विज्ञान है अथवा नहीं तथा इसे भविष्य के लिए स्थगित करने की सलाह दी है। वाल्डो, फाइनर, मोरिस तथा कोहन आदि ऐसे विद्वान है जो लोक प्रशासन को विज्ञान नहीं मानते। लोक प्रशासन को विज्ञान न मानने के कारण निम्नलिखित है :-

(i) **निश्चितता का अभाव**-लोक प्रशासन द्वारा किये गये प्रयोगों तथा साधनों का फल प्रत्येक स्थिति में एक सा नहीं जबकि विज्ञान में प्रयोग तथा साधन प्रत्येक स्थिति में एक जैसा परिणाम देते है, निष्कर्ष निश्चित होते है। भौतिक शास्त्र का एक निर्माण है जिसे 'गुरूत्वाकर्षक का सिद्धान्त' कहते है। इसके अनुसार यदि कोई वस्तु ऊपर से फैंकी जाए तो एक निश्चित सीमा के भीतर आने पर पृथ्वी शक्ति से उसे अपनी ओर खींच लेती है। ये नियम और भौतिक विज्ञानों के अन्य सभी नियम अटल, अपरिवर्तनशील, अकाट्य होते हैं। लोक प्रशासन द्वारा प्रतिपादित नियम, स्थान और काल के अनुसार बदलते है क्योंकि सामाजिक विज्ञानों को मनुष्यों से व्यवहार करना पड़ता है। मनुष्यों के व्यवहार में अत्यधिक विभिन्नता पायी जाती है फलतः सामाजिक विज्ञानों में निश्चित नियम नहीं बनाये जा सकते।

(ii) **सार्वभौमिक नियमों व सिद्धान्तों का अभाव**- हेनरी फेयोल, उर्विक, टेलर, विलोबी, स्टेने तथा अन्य लेखकों ने समय-समय पर सर्वप्रथम सिद्धान्तों की रचना करने की चेष्टा की परन्तु उनसे कोई भी किसी दूसरे के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ। जैसा कि व्हाइट ने संकेत किया है, लोक प्रशासन के प्रत्येक सिद्धान्त के विपक्ष में उतना ही मान्य दूसरा सिद्धान्त प्रस्तुत किया जा सकता हैं।

(iii) **आदर्शात्मकता**- विज्ञान में नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों का कोई स्थान नहीं होता जबकि लोक प्रशासन के सिद्धांत निरन्तर प्रशासकीय क्रिया की तथ्यपरक एवं आदर्शमूलक धारणाओं अर्थात् ''क्या है'' तथा ''क्या होना चाहिए'' के बीच झूलते रहते है। प्राकृतिक विज्ञान अनिवार्य रूप से तथ्यपरक होते है तथा उनमें दृष्टिकोण की निरपेक्षता सम्भव होती है। इस प्रकार लोक प्रशासन को विज्ञान इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि इसमें आदर्शात्मकता अथवा भावनात्मकता रहती है तथा नैतिकता का पुट शामिल रहता है।

(iv) **पूर्व - कथनीयता का अभाव**- लोक प्रशासन को विज्ञान न मानने का एक कारण यह स्पष्ट है कि इसमें भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। इसका कारण यह है कि लोक प्रशासन मनुष्य की प्रशासकीय समस्याओं का अध्ययन करता है। मानव स्वभाव में मुक्त इच्छाओं, पसन्दों, प्रयोजनों तथा मूल्यों आदि अनेक तत्वों का समावेश होता है।

(v) **तटस्थ दृष्टिकोण का अभाव**- लोक प्रशासन में तटस्थता और निष्पक्ष दृष्टिकोण संभव नहीं जो भौतिक विज्ञानों में पाया जाता है।

(vi) **डॉ. अवस्थी के अनुसार-** ''मानवीय क्रियाओं से सम्बन्धित होने के कारण लोक प्रशासन के नियम कम विश्वसनीय होते हैं क्योंकि मानवीय क्रियाकलापों के ऐसे मुख्य उद्देश्यों के सम्बन्ध में बहुत कम ज्ञान होता है जिसमें दृढ़ विश्वास किया जाए अथवा मानव व्यवहार के सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ की जा सकें।

2. लोक प्रशासन विज्ञान बनने की प्रक्रिया में है :

- चार्ल्स बियर्ड ने कहा है कि लोक प्रशासन में पर्याप्त मात्रा में सूक्ष्मता, निश्चितता एवं पूर्वकथनीयता पायी जाती है। हम जानते है कि अच्छे बजट या लेखांकन संबंधी नियमों का पालन करने का क्या परिणाम होता है?
- **हबर्ट साइमन** ने ''प्रशासनिक व्यवहार''में परम्परागत धारणाओं की आलोचना करते समय यही दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने सुझाव दिया कि एक विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन का विकास करने के लिए व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करना चाहिए तथा प्रशासन को चलाने के क्रियात्मक सुझाव देने चाहिए।

3. लोक प्रशासन एक विज्ञान है :

गुलिक एवं उर्विक ने प्रशासन को विज्ञान माना है। लुथर गुलिक व उर्विक ने **'Papers on science of administration' पेपर्स ऑन साइंस ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन** नामक पुस्तक में इसे विज्ञान बताया।

(i) **कालान्तर में लोक प्रशासन विज्ञान का रूप ले लेगा :** लोक प्रशासन का वर्तमान अध्ययन हमारे सामने सम्बद्ध विचारों का एक ढ़ाँचा मात्र प्रस्तुत करता है। यह ढांचा और अधिक अध्ययन तथा विश्लेषण का आधार बन सकता है।

- **उर्विक** - ''लोक प्रशासन में अनेक अज्ञात तत्व है जिनका अधिकांश क्षेत्र अनखोजा है, सामाजिक सामुदायों के संचालन में एक सामान्य तत्व निहित है''।

(ii) **लोक प्रशासन अपने वर्तमान स्वरूप में :**

- **विज्ञान** - विज्ञान की भांति लोक प्रशासन के अपने नियम है, लोक प्रशासन में भी किसी समस्या के समाधान में एकरूप नीति का पालन किया जाता है अत: यह इस दृष्टि से विज्ञान है।

(iii) **लोक प्रशासन में यथार्थता और निश्चितता है :**

- लोक प्रशासन में निष्कर्ष भले ही यह ना बता सके कि प्रशासक क्या निर्णय ले परन्तु उन्हें इतनी सुनिश्चितता अवश्य ही प्राप्त कर ली कि उसे मार्ग अपनाने से सावधान करते है।
- **चार्ल्स ए. बीअर्ड** मानते थे कि लोक प्रशासन के क्षेत्र में ऐसे नियमों और स्वयंसिद्ध सूत्रों का विकास हो गया है जिनके बारे में अनुभव से कहा जा सकता है कि वे व्यावहारिक प्रयोग में लाये जा सकते है तथा उनके सहारे पूर्वानुमान लगाए जा सकते हैं।

(iv) **सिद्धान्तों का विकास-** विज्ञान की तरह इसमें भी सिद्धांत है। यदि हम मानव समाज के इतिहास को देखे तो स्पष्ट होता है कि कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में, मैकियावली के 'द प्रिंस' में, अबुल फजल के 'अकबरनामा' में प्रशासन के मूल सिद्धांत विद्यमान है। अरस्तू, प्लेटो, व्हाइट, हर्बट साइमन, टेलर व ग्लैडन के लेखन में सिद्धान्तों की विवेचना मिलती है।

(v) **गुणों की समानता-** एक वैज्ञानिक मे जिस प्रकार साहस, धैर्य तथा निष्पक्षता आदि की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार एक कुशल प्रशासक में भी ये गुण जरूरी है। ड्वाइड वाल्ड़ों ने शासकों को "सामान्यीकरण का विशेषज्ञ" कहा हैं। लोक प्रशासन मे व्यवहारवाद तथा आधुनिक उपागमों के प्रयोग व प्रवेश के पश्चात् विज्ञानत्व की मात्रा निंरतर बढ़ती जा रही है। लोक प्रशासन को उसकी वर्तमान अवस्था में विज्ञान मानने से कुछ खतरे उत्पन्न हो सकते है। मानवीय व्यवहार का पूर्णतः वैज्ञानिक विश्लेषण संभव नहीं। ऐसा होने पर प्रशासन में सर्ववादिता, कठोरता व जड़ता आ जायेगी जिसमें व्यक्ति का स्वतंत्र चिंतन संभव नहीं है। अभी लोक प्रशासन में सभी जगह प्रयोग किये जाने वाले पूर्णतः सत्यापित सामान्य नियम (Principle) नहीं पाये जाते। **वालेस** ने अपनी पुस्तक 'संघीय विभागीकरण' में बताया है कि अज्ञानवश लोग लोक प्रशासन के मोटे निष्कर्षो को सिद्ध और निश्चित सिद्धांत मान सकते है जबकि वास्तव में वे प्रकल्पना अथवा कल्पना मात्र है। इसमें खतरा है कि लोक प्रशासन के भीतर अपरिपक्व अवस्था में एक प्रकार की कठोरता आ जाएगी जिससे जिज्ञासा का मार्ग अवरूद्ध हो जायेगा और प्रगति रूक जाएगी।

❖ **लोक प्रशासन एक सामाजिक विज्ञान के रूप में :** प्राकृतिक विज्ञानों की तरह विज्ञान तो नहीं लेकिन अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह इसे विज्ञान कहा जा सकता है। जिसके निम्न कारण है-

(i) यह एक नवीन विज्ञान है क्योंकि इसका सैंद्धांतिक अध्ययन कुछ ही वर्षो से शुरू हुआ है।

(ii) सामाजिक विज्ञानों की भांति लोक प्रशासन एक शुद्ध विज्ञान ना होकर पर्यवेक्षक विज्ञान है जिसमें समस्याओं का अध्ययन करके उत्पन्न होने के कारणों तथा उनके निदान के उपाय खोजे जाये।

(iii) अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह लोक प्रशासन तथ्यपरक व आदर्शमूलक दो प्रकार का विज्ञान हो सकता है क्योंकि लोक प्रशासन का सम्बन्ध 'क्या है' से न होकर 'क्या होना चाहिए' से भी है। इन तर्कों के अलावा टेंलर, साइमन, उर्विक व रिग्ज ने लोक प्रशासन को सामाजिक विज्ञान माना है। लोक प्रशासन अन्य सामाजिक विज्ञानों की भांति ही सकारात्मक विज्ञान है और इसमें प्रशासन संबंधी ऐसे सिद्धांत है जो सभी

स्थान पर लागू होते है, साथ ही यह एक विकासात्मक विज्ञान है जिनके नियमों व सिद्धान्तों में परिवर्तन होते रहते है। लोक प्रशासन कला भी है विज्ञान भी है लेकिन जहाँ तक विज्ञान होने का प्रश्न है। यह भौतिक तथा रसायन विज्ञान की भांति का विज्ञान ना होकर सामाजिक विज्ञान ही है।

लोक प्रशासन का क्षेत्र

- शैक्षिक विषय के रूप में लोक प्रशासन का जन्म 1887 में हुआ। इसका जनक 'वुडरों विल्सन' (W. Wilson) को माना जाता है। विल्सन ने अपने लेख ''प्रशासन का अध्ययन'' में लोक प्रशासन का प्रारम्भ माना जाता है। अपने इस लेख में विल्सन ने राजनीति को प्रशासन से अलग किया।
- लोक प्रशासन में निम्नलिखित दृष्टिकोण पाये जाते है-

1. POSDCORB या संकुचित दृष्टिकोण। 2. विषयवस्तु या व्यापक दृष्टिकोण।
3. लोककल्याणकारी दृष्टिकोण।

1. POSDCORB या संकुचित दृष्टिकोण :

POSDCORB के शब्द इस प्रकार है -			
P	Planning	योजना बनाना	कार्यों की रूपरेखा तैयार कर निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नीतियों का निर्धारण करना।
O	Organizing	संगठन बनाना	इस तरह से संगठन के ढाचे के प्रशासकीय कार्यो का विभाजन उचित ढंग से हो ताकि विभाग में समन्वय किया जा सके।
S	Staffing	कर्मचारियों की व्यवस्था करना	संपूर्ण कर्मचारी वर्ग की नियुक्ति व प्रशिक्षण तथा उनके लिए अनुकूल दशाओं का निरीक्षण करना।
D	Directing	निर्देशन करना	वे निर्णय जो निर्णयकर्त्ताओं के द्वारा कर्मचारियों के कार्यो के सम्बन्ध में लिए जाते हैं।
Co	Co-Ordination	समन्वय करना	कार्यो से संबंधित विभिन्न विभागों को परस्पर सम्बन्धित करना। परस्पर समन्वय स्थापित करना
R	Reporting	रपट देना/ प्रतिवेदन देना	निम्न कर्मचारियों के सम्बन्ध में निरीक्षण अधिकारियों को सूचित करना तथा निरीक्षण के लिए अभिलेख तैयार करना।
B	Budgeting	बजट तैयार करना	वित्त व्यवस्था का संक्षिप्त अध्ययन कर बजट तैयार करना

- लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र के सम्बन्ध में लूथर गुलिक ने जिस मत को प्रतिपादित किया उसे POSDCORB कहा जाता है। इस मत के अनुसार प्रशासन में कुछ तत्वों का होना आवश्यक है तथा इन आवश्यक तत्वों को अंग्रजी के सात शब्दों के प्रथम अक्षरों को मिलाकर बनाया गया है। लुथर गुलिक से पहले उर्विक व हेनरी फेयोल इत्यादि विद्वानों ने भी पोस्डकार्ब दृष्टिकोण अपनाया था।
- पोस्टकोर्ब क्रियाएँ सामान्यत: सभी संगठनों में सम्पन्न की जाती है। प्रशासन के सभी क्षेत्रों में प्रबन्धन संबंधी सामान्य समस्याएँ लगभग समान होती है और अनिवार्य होती है। यह विचार सामान्यत: लोक प्रशासन के क्षेत्र में स्वीकार किया जाता है।

❖ पोस्डकोर्ब विचार की आलोचना :

1. पोस्डकोर्ब लोक प्रशासन मे प्रशासनिक उपकरणों का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि लोक प्रशासन एक भिन्न चीज है। प्रशासन प्रमुखत: लोक सेवा, नीति निर्माण, जनता से जुड़ाव का मुख्य कार्य करता है जो पोस्डकोर्ब सिद्धांत में अनुपस्थित है।
2. पोस्डकोर्ब उपागम 'तकनीक निर्देशित' है बजाय 'विषय क्या निर्देशित' होने के अर्थात् 'कैसे करना है' (तकनीक निर्देशित) पर अधिक ध्यान बजाय 'क्या करना है' (विषय निर्देशित) के।
3. पोस्डकोर्ब में मानवीय सम्बन्ध उपागम पर ध्यान नहीं दिया गया है। हॉथोर्न प्रयोग प्रशासन को मानवीय पहलू से ही देखता हैं।

- लोक प्रशासन के अन्तर्गत केवल प्रशासन की तकनीकों एवं विधियों का ही अध्ययन नहीं किया जाना चाहिए बल्कि इसको अपना ध्यान उन मनुष्यों पर भी केन्द्रित करना चाहिए जो कि उन तकनीकों एवं विधियों को प्रयुक्त करते है।

2. विषयवस्तु या व्यापक दृष्टिकोण :

- यह दृष्टिकोण सेवाओं और प्रशासनिक एंजेसी के कार्यो पर जोर देता है। यह दलील देता है कि एक एजेंसी की सारभूत समस्याएँ उसकी विषय सामग्री (जैसे सेवाएं और काम) पर निर्भर करती हैं जिससे उसका सरोकार होता है। अर्थात् लोक प्रशासन सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यो तथा सेवाओं जैसे समाज कल्याण, सुरक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि व परिवहन इत्यादि जैसी विषय सामग्री पर आश्रित हैं।
- लेविस मेरियम ने कहा हैं ''लोक प्रशासन एक दोधारी औजार है, जैसे कैंची की दो धारें। एक धार POSDCORB द्वारा समेटे जाने वाले क्षेत्रों का ज्ञान हो सकती है और दूसरी धार उस विषय वस्तु का ज्ञान हो सकती है जिनमें ये तकनीक प्रयोग की जाती हैं। प्रभावी औजार बनाने के लिए इन दोंनो ही धारों को तीक्ष्ण होना चाहिए।''

3. लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण :

- इसे 'आदर्शवादी दृष्टिकोण' कहा जाता हैं। इसके समर्थक राज्य और लोक प्रशासन में अधिक अन्तर नहीं मानते दोनों का एक ही उद्देश्य – जनहित अथवा जनता को हर प्रकार से सुखी बनाना।
- लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण के समर्थक कहते है कि "आज लोक प्रशासन सभ्य जीवन का रक्षक मात्र ही नहीं, वह सामाजिक परिवर्तन का महान् साधन भी है।"
- **निष्कर्षतः** हम कह सकते है कि वर्तमान युग में लोक प्रशासन की क्रियाओं का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है और समाजवादी व जनकल्याणकारी विचारधारा की प्रगति के साथ-साथ वह निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। लोक प्रशासन के अन्तर्गत केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय स्तर के सभी स्तरों की सरकारों के संगठन एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन किया जाता है, पोस्डकोर्ब द्वारा दर्शायी तकनीकों का भी अध्ययन किया जाता है और मानवीय सम्बन्धों का भी।

लोक प्रशासन का महत्व

लोक प्रशासन मानव जीवन की बहुआयामी जरूरतों की पूर्ति करता हैं।

- **एल.डी.व्हाइट** – "लोक प्रशासन आधुनिक शासन व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु हैं।" 'पुलिस राज्य' की नकारात्मक अवधारणा का स्थान 'जनकल्याणकारी राज्य' की सकारात्मक अवधारणा ने ले लिया है।
- **डिमॉग** – 'प्रशासन का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि प्रशासन का दर्शन, जीवन दर्शन बनने के करीब आ गया है।"
- **नेहरू** – "लोक प्रशासन सभ्य जीवन का रक्षक मात्र नहीं वरन् सामाजिक न्याय व सामाजिक जीवन के परिवर्तन का महान साधन है।"
- **एपल्बी** – "लोक प्रशासन बिना सरकार केवल वाद-विवाद का क्लब है।"
- **फेलिक्स ए. नीग्रो** – "प्रशासन का असली धर्म जनता को दी जाने वाली बुनियादी सेवाएँ हैं।"
- **सी. मेरिया** – "प्रशासन का ऐसी मानव तकनीक का उद्भव है जो आदमी को उसके जटिल परिवेश के अनुकूल बनाती है।"
- **रैम्जे म्यूर** – "सरकारे आती जाती रहती हैं, मंत्रियों का उत्थान पतन होता रहता है। किन्तु देश का प्रशासन सदा चलता रहता हैं। कोई भी क्रांति इसे बदल नही सकती और कोई भी विद्रोह इसे जड़ से उखाड़ नहीं सकता।"

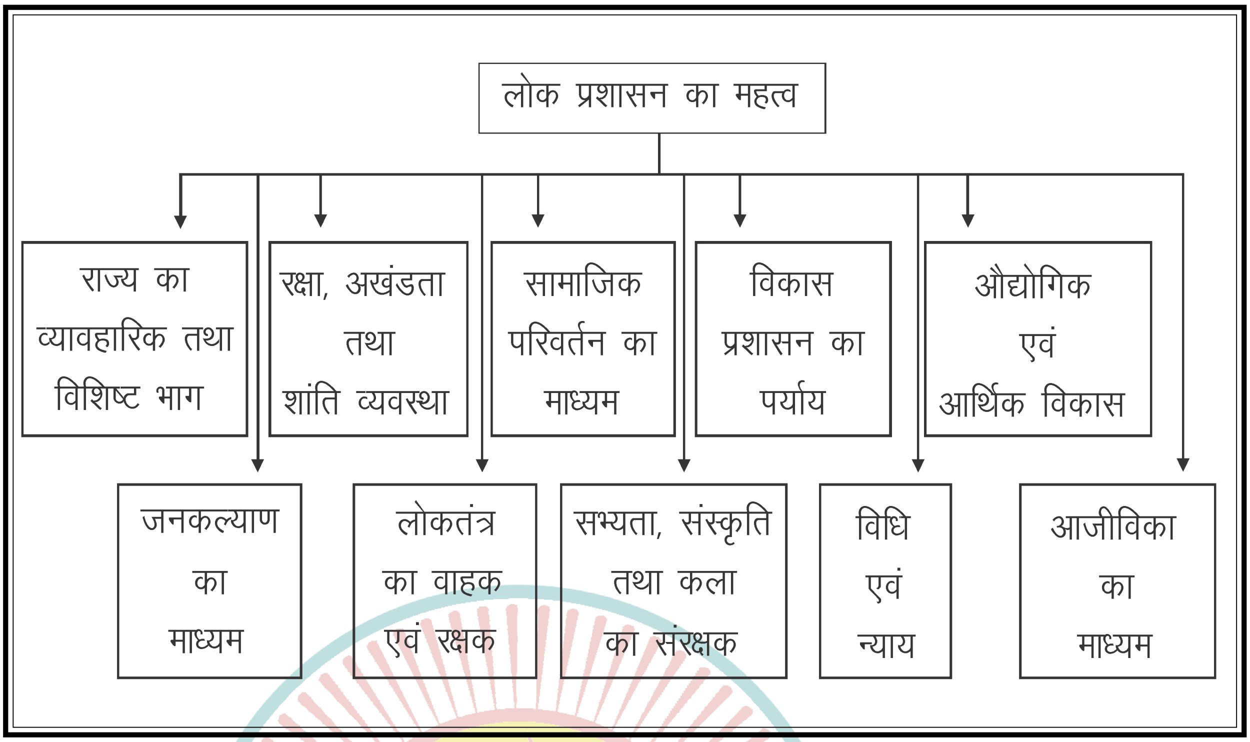

- लोक प्रशासन ''आधुनिक सभ्यता का हृदय'' हैं। यह न केवल लोकतांत्रिक राज्यों में अपितु पूंजीवादी, साम्यवादी, विकसित, विकासशील, अविकसित यहाँ तक कि तानाशाही व्यवस्था वाले देशों में भी अति महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकार लोक प्रशासन के माध्यम से ही नीति व योजना का निर्माण व कार्यान्वयन करती हैं।

1. राज्य का व्यावहारिक तथा विशिष्ट भाग :

- राज्य के मूलभूत तत्वों (निश्चित भू-भाग, जनसंख्या, सम्प्रभुता तथा शासन) में शासन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- **अरस्तु** – ''राज्य जीवन के लिए अस्तित्व में आया, अच्छे जीवन के लिए उसका अस्तित्व बना हुआ है।''
- आधुनिक युग में 'राज्य' को आवश्यक बुराई के रूप में नहीं बल्कि मानव कल्याण तथा विकास के लिए एक अनिवार्यता के रूप में देखा जाता है। वृहद स्तरीय तथा जटिल कार्य केवल सरकार ही कर सकती है। ऐसा माना जाता है कि भारत में जनगणना का कार्य, विश्व की सबसे बड़ी प्रशासनिक प्रक्रिया हैं।

2. जनकल्याण का माध्यम :

- आधुनिक विश्व में राज्य का स्वरूप न्यूनाधिक रूप में लोककल्याणकारी तथा लोकतांत्रिक हैं। आज अहस्तक्षेपवादी राज्य की अवधारणा प्रासंगिक नहीं है।
- **व्हाईट** – ''कभी ऐसा भी समय था जब जनता सरकारी (राजा के) अधिकारियों के दमन के अतिरिक्त और कोई अपेक्षा नही करती थी। किन्तु आज का समय प्रशासन से सुरक्षा तथा विभिन्न प्रकार की सेवाओं की आशा करता है।''

- चिकित्सा, परिवार कल्याण, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौढ़-शिक्षा, जन संचार, परिवहन, ऊर्जा, सामाजिक सुरक्षा, कृषि, उद्योग, पशुपालन, आवास इत्यादि मूलभूत मानवीय सामाजिक सेवाओं का संचालन प्रशासन के माध्यम से ही संभव हैं।

3. रक्षा, अखण्डता तथा शांति व्यवस्था :

- आज का राज्य राजशाही की भांति विस्तारवादी ना होकर जन कल्याणकारी है। हालांकि वर्तमान में भी राज्य अपनी सीमाओं की रक्षा करता है और यह दायित्व 'सैनिक प्रशासन' निभाता है। शांति काल में सीमाओं की चौकसी तथा राष्ट्र की आंतरिक अखण्डता, शांति व्यवस्था, सौहार्द तथा समरसता बनाए रखने का दायित्व लोक प्रशासन का हैं।

- **फाइनर** – ''कुशल प्रशासन, सरकार का एकमात्र सशक्त सहारा है। इसकी अनुपस्थिति में राज्य क्षत-विक्षत हो जायेगा।'' न्याय, पुलिस, सशस्त्र, हथियार निर्माण, अन्तरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, बहुमूल्य खनिज, वैदेशिक सम्बन्ध व गुप्तचर इत्यादि गतिविधियाँ जो आंतरिक-बाह्य सुरक्षा को प्रभावित करती है, लोक प्रशासन के अंतर्गत आते हैं।

4. लोकतंत्र का वाहक एवं रक्षक :

- प्रजातंत्र की अवधारणा सैद्धान्तिक रूप में चाहे कितनी ही सशक्त और प्रभावी क्यों ना हो किन्तु जब तक लोक-प्रशासन इस दिशा में सार्थक प्रयास ना करें तब तक प्रजातंत्र की स्थापना का विस्तार संभव नहीं।

- आम व्यक्ति तक प्रशासकीय कार्यों की पहुंच, नागरिक व मानवाधिकारों की क्रियान्विति, निष्पक्ष चुनाव, जन-शिकायतों का निस्तारण, राजनीतिक चेतना में वृद्धि करना व जन सहभागिता सुनिश्चित करने के क्रम में लोक प्रशासन की भूमिका सर्वविदित हैं।

5. सामाजिक परिवर्तन का माध्यम :

- आधुनिक समाजों की परम्परागत जीवन शैली, अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों में सुनियोजित परिवर्तन लाना एक सामाजिक आवश्यकता हैं।

- भारत में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, बालश्रम, बाल अपराध सहित दहेज, बाल-विवाह व निरक्षरता इत्यादि सामाजिक समस्याएं विद्यमान है।

- कार्यरत प्रशासनिक संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक विकास सहित आम व्यक्ति का जीवन स्तर ऊँचा उठाना रहा है।

6. सभ्यता - संस्कृति और कला का संरक्षक :

- प्रत्येक राष्ट्र की सांस्कृतिक विविधता तथा विरासत का संरक्षण एक अनिवार्य प्रशासनिक कृत्य बन चुका है। आदिकाल से कला-संस्कृति को राजाओं का संरक्षण मिला। वर्तमान भौतिक युग में सांस्कृतिक परिवर्तन की दर अधिक है अत: राज्य की भूमिका और अधिक गंभीर होती जा रही है।

7. विकास प्रशासन का पर्याय :

- वर्तमान प्रशासन का कार्य केवल राजस्व एकत्र करना व शांति व्यवस्था (नियामकीय कृत्य) बनाए रखना ही नहीं बल्कि विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना भी हैं।
- समाजवादी शासन में संपूर्ण विकास प्रशासन पर निर्भर वहीं पूंजीवादी शासन में भी विकास की मूलभूत नीतियां प्रशासन पर ही निर्भर होती है।

8. विधि एवं न्याय :

- लोक प्रशासन का प्रमुख कार्य कानून एवं नीति में विधायिका को परामर्श प्रदान करना तथा विधायिका के द्वारा स्वीकृत कानूनों एवं नीतियों को व्यावहारिक रूप में लागू करना हैं।
- **ए. वी. डायसी :** मानव व्यवहार को नियंत्रित करने तथा सामाजिक एकता सुनिश्चित करने के लिए सुव्यवस्थित एवं न्यायसंगत प्रशासनिक तंत्र का होना नितांत आवश्यक है। यदि अंधेरे में न्याय का दीपक बुझ जाये तो उस गहन अंधकार का अनुमान लगाना कठिन हैं।

9. औद्योगिक एवं आर्थिक विकास :

- मानव जीवन में भौतिक वस्तुओं तथा प्रमुख तकनीकी संसाधनों की सुलभता सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक राज्यों द्वारा अनेक प्रकार की औद्योगिक नीतियाँ तथा आर्थिक कार्यक्रम निर्मित किये जाते है।
- **मार्शल ई. डिमॉक** - ''लोक प्रशासन प्रत्येक नागरिक के लिए महत्व का विषय है क्योंकि वह प्रशासन से कुछ निश्चित सेवाएँ प्राप्त करता है एवं सरकार को कर (Tax) देता है।''

10. आजीविका का माध्यम :

- लोक प्रशासन केवल जनकल्याण तथा विकास कार्यक्रम ही संचालित नहीं करता बल्कि विशाल जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराने का श्रेष्ठ स्थल हैं।''
- जेराल्ड केडेन ने अपनी रचना 'दि डायनेमिक्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन' (1971) में कहते है कि मौजूदा आधुनिक समाज में लोक प्रशासन ने निम्न अहम भूमिकाएँ अपना ली है।

i. राजकोषीय नीति का संरक्षण।

ii. स्थिरता और व्यवस्था को कायम रखना।

iii. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को संस्थागत रूप देना।

iv. विशाल स्तर की वाणिज्यिक सेवाओं का प्रबंधन करना।

v. समाज के कमजोर वर्गों की रक्षा करना।

vi. लोकमत निर्माण में भूमिका अदा करना।

vii. लोक नीतियों और राजनीतिक रूझानों को प्रभावित करना।

❖ लोक प्रशासन के महत्व में वृद्धि के कारण :

- पुलिस राज्य के स्थान पर लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का उदय होना।
- जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से होना।
- पर्यावरणीय निम्नीकरण/अकाल, सूखा, बाढ़, ग्लोबल वार्मिंग आदि में वृद्धि होना।
- वर्ग-संघर्ष का जन्म।
- साम्प्रदायिक दंगे व जातीय हिंसा को बढ़ावा मिलना।
- नस्लभेद को बढ़ावा मिलना।
- साइबर क्राइम का लगातार बढ़ना।
- औद्योगिक क्रांति

11. LPG (1990) आर्थिक सुधारों के बाद लोक प्रशासन का बदलता स्वरूप :

- राज्य का पश्च बेलन सिद्धांत तथा 'गैर नौकरशाहीकरण' (Golden handshake scheme) पर बल।
- लोक प्रशासन नियंत्रणकर्ता के स्थान पर प्रोत्साहनकर्ता बन गया।
- प्रशासन में 3E का समावेश करना।
- लोक प्रशासन में जनसम्पर्क और जनसहभागिता पर बल दिया गया।
- नागरिक अधिकार पत्र, सामाजिक अंकेक्षण, उपभोक्ता संरक्षण संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा मिलना जैसे-नवाचार आदि।
- प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी (E-Governance) का बढ़ता प्रयोग।
- प्रशासनिक नीतियों के निर्धारण में (World bank, IMF, UNO) विश्व बैंक, आईएमएफ, यूएनओ आदि की भूमिका में वृद्धि। अत: इन सभी गतिविधियों ने लोक प्रशासन के महत्व के दायरे को असीमित मात्रा तक विस्तृत कर दिया है।

लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन

❖ प्रशासन को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है:-

1. लोक प्रशासन (Public Administration)
2. निजी प्रशासन (Private Administration)

- प्रशासन सामाजिक जीवन में हमारे साथ प्रारंभ से विद्यमान रहा है चाहे वह लोक प्रशासन के रूप में हो या निजी प्रशासन के रूप में। प्रशासन एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया सामूहिक व सहयोगात्मक प्रयास हैं। लोक प्रशासन जनता के कल्याण के लिए है जबकि निजी प्रशासन पूर्णत: लाभ के लिए संचालित होता हैं।

❖ लोक प्रशासन की विशेषताएँ :

1. यह सरकारी तंत्र का हिस्सा है।
2. विशेष रूप से नियमों व कानून को लागू करने से जुड़ा, सरकार की तीनों शाखाओं तथा पारम्परिक संबंधों का अध्ययन करता हैं।
3. संवैधानिक व वैधानिक कानूनों के अन्तर्गत कार्य करता हैं।
4. लोक प्रशासन में पद सोपानिक व्यवस्था, आदेश की एकता जैसे सिद्धान्तों का कठोरता से पालन किया जाता है।
5. वित्तीय मामलों पर संसदीय नियंत्रण तथा नीति निर्माण में महती भूमिका के कारण राजनीतिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है।
6. लोक प्रशासन का अंतिम लक्ष्य जनता का सर्वत्र कल्याण है।
7. लोक प्रशासन पर राजनीतिक नेतृत्व का प्रत्यक्ष या परोक्ष नियंत्रण रहता हैं।
8. बदलते समय में सेवा भाव मूल मंत्र की सिद्धी हेतु लोक प्रशासन निजी समुदायों एवं वर्गों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ हैं। जैसे SHGs, NGOs या PPP मॉडल की बात हो।
9. समयानुकूल लोक प्रशासन मानवीय विचारधारा से भी अत्यधिक प्रभावित हुआ।

❖ निजी प्रशासन की विशेषताएँ :

- निजी प्रशासन व्यक्ति या व्यक्ति समूह द्वारा नियन्त्रित, निर्देशित एवं संचालित होता है जिसका मुख्य लक्ष्य लाभ कमाना है।

1. निजी प्रशासन मुख्यत: लाभ अर्जन पर कार्य करता है।
2. निजी प्रशासन प्राय: छोटे एवं सरल प्रकृति के संगठनों द्वारा संचालित होता हैं।

3. निजी प्रशासन वैधानिक, संवैधानिक कानूनों की बजाय निजी नियमों से अधिक प्रभावित होता है।

4. निजी प्रशासन में कार्यकुशलता, मितव्ययता, लोचशीलता एवं समयानुरूप परिवर्तन की क्षमता अधिक पाई जाती है।

5. इसका स्वरूप गैर राजनीतिक होता है।

6. उपभोक्ताओं के प्रति अधिक उत्तरदायी होता है।

7. निजी प्रशासन में गोपनीयता अधिक पायी जाती है।

8. उपभोक्ताओं की रुचि, माँग एवं अपेक्षाओं के अनुरूप अपने उत्पादों, गतिविधयों में परिवर्तन इनकी प्रमुख आवश्यकता एवं विशेषता हैं।

9. निजी प्रशासन के संगठन का अस्तित्व स्थायी ना होकर अस्थायी होता हैं।

10. निजी प्रशासन में अधिक प्रतिस्पर्धा पायी जाती है।

❖ **लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन में अंतर्संबंध :** लोक प्रशासन व निजी प्रशासन के सम्बन्ध को लेकर विभिन्न विद्धानों के मत अलग-अलग हैं। इस सम्बन्ध को लेकर दो मत प्रचलित हैं- एक दोनों को समान मानता है तथा दूसरा दूसरा निजी प्रशासन को अलग मानता हैं।

लोक प्रशासन निजी प्रशासन-समान

समर्थक-हेनरी फेयोल,
मेरी पार्कर, फोलेट,
उर्विक।

लोक प्रशासन निजी प्रशासन-पृथक

समर्थक-पॉल एच. एपॅलबी,
हरबर्ट. साइमन,
सर जोसिया स्टाम्प नीग्रो।

❖ **लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन की तुलना :**

निजी प्रशासन	लोक प्रशासन
प्रबंधन, संगठन तथा व्यापार उद्यम का संचालन करना।	संसाधनों के प्रबंधन व सरकार का लक्ष्य पूरा करना
व्यापारिक गतिविधिों का संचालन	राजनीतिक गतिविधि का संचालन
यह समतावादी उपागम है।	यह नौकरशाही उपागम है।
उद्देश्य लाभ कमाना	उद्देश्य जन कल्याणकारी
इसका झुकाव मालिकों की तरफ होता है।	इसका झुकाव जनता की तरफ होता है।
लाभ पर कर लगाता है।	ड्यूटीज, कर, फीस

***